an>

Title: Need to exclude artists making Ganesh idol from the ambit of GST.

श्री धनंजय महाडीक : माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे शून्य काल में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। किसी भी शुभ काम की शुरुआत भगवान गणेश जी की पूजा से करते हैं। हमारे देश में गणेश उत्सव या गणेश फैस्टिवल बहुत बड़ा उत्सव माना जाता है। इसमें करोड़ों लोग शामिल होते हैं और सभी धर्मों के लोग शामिल होते हैं। मुझे बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि भगवान गणेश जी की मूर्ति पर 28 परसेंट जीएसटी लागू किया गया है। हमें यह समझना होगा कि हर साल रॉ मैटीरियल में दस परसेंट की वृद्धि होती है, इस पर जीएसटी लगने से मूर्तियां और भी महंगी हो जाएंगी। मैं उदाहरण देना चाहता हूं, 15 फीट की गणेश जी की मूर्ति पहले 80,000-90,000 रुपए की मिलती थी, जीएसटी लगने के कारण एक लाख या एक लाख पांच या दस हजार की होने वाली है।

माननीय अध्यक्ष : सबको वह देता है तो उसके लिए भी पैसे खर्च करो। क्या हो गया?

श्री धनंजय महाडीक : माननीय अध्यक्ष जी, यह हमारी आस्था और भावना से जुड़ा विषय है। महाराष्ट्र में यह उत्सव बहुत बड़ा माना जाता है, इसलिए महाराष्ट्र के सभी गणेश उत्सव मंडलों ने विशेषकर मुम्बई का लालबाग का राजा, पुणे का डबडूशेट हलवाई, कोल्हापुर के सभी गणेश उत्सव मंडलों ने इसका विरोध किया है। गणेश उत्सव अगले एक महीने बाद आ रहा है और मई, जून महीने में कई लोगों ने इसकी बुकिंग की हुई है, उनको ज्यादा दाम देना पड़ेगा। भगवान की मूर्ति हमारी आस्था और भावना का विषय है।

मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि इस पर जीएसटी नहीं लगना चाहिए, किसी भी भगवान की किसी भी मूर्ति पर जीएसटी नहीं लगना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष:

श्री भैरों प्रसाद मिश्र और

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे को श्री धनंजय महाडीक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

डॉ. शशि थरूर (तिरुवनन्तपुरम) : अगर गणेश जी ने प्रार्थना नहीं सुनी तो क्या जीएसटी में रिबेट दे देंगे?